Regarding transfer of land in Tughlakabad in Delhi

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली) : आदरणीय सभापति महोदया, तुगलक वंश के शासकों ने 700 साल पहले 2,800 बीघा जमीन पर तुगलकाबाद गांव को बसाया था । जब सन् 1857 में आजादी की पहली लड़ाई लड़ी गई थी, तुगलकाबाद गांव और महरौली के समीप तंवर गोत्र के 12 गांवों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया था । अंग्रेजों ने उन गांववासियों को मौत के घाट उतार दिया था । अंग्रेजों ने दंड के रूप में तुगलकाबाद गांव की 2,800 बीघा जमीन जब्त कर ली थी । सन् 1995 में बिना किसी नोटिफिकेशन के वह जमीन एएसआई को ट्रांसफर कर दी गई थी ।

आदरणीय सभापति महोदया, सन् 1993 के बाद जो मकान बने थे, एएसआई ने उनको तोड़ने का नोटिस दे दिया है । मैं आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह करना चाहता हूं कि उस नोटिस को वापस लिया जाए । अंग्रेजों ने जो सजा दी है, उस सजा से गांववासियों को मुक्ति दिलवाई जाए । मैं समझता हूं कि सन् 1857 के शहीदों के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी । मैं आपके माध्यम से सरकार से यह मांग करना चाहता हूं ।

माननीय सभापति : माननीय सदस्यगण, मेरे पास 80 से ज्यादा सदस्यों के नाम हैं तथा समय सीमित है । अगर आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे, तभी सभी माननीय सदस्यों को बोलने का मौका मिलेगा ।

श्री जितेंद्र कुमार दोहरे ? उपस्थित नहीं ।

श्री नारायणदास अहिरवार ? उपस्थित नहीं ।

श्री अभिमन्यु सेठी जी ।